''मीठे बच्चे – ज्ञान का तीसरा नेत्र सदा खुला रहे तो खुशी में रोमांच खड़े हो जायेंगे, खुशी का पारा सदा चढ़ा रहेगा''

प्रश्नः- इस समय मनुष्यों की नज़र बहुत कमज़ोर है इसलिए उनको समझाने की युक्ति क्या है?

उत्तरः- बाबा कहते उनके लिए तुम ऐसे-ऐसे बड़े चित्र बनाओ जो वह दूर से ही देखकर समझ जाएं। यह गोले का (सृष्टि चक्र का) चित्र तो बहुत बड़ा होना चाहिए। यह है अन्धों के आगे आइना।

प्रश्नः- सारी दुनिया को स्वच्छ बनाने में तुम्हारा मददगार कौन बनता है?

उत्तरः- यह नैचुरल कैलेमिटीज तुम्हारी मददगार बनती है। इस बेहद के दुनिया की सफाई के लिए जरूर कोई मददगार चाहिए।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बाप जो सिखलाते हैं उसे अमल में लाना है, सिर्फ कागज़ पर नोट नहीं करना है। विनाश के पहले जीवनबन्ध से जीवनमुक्त पद प्राप्त करना है।

2) अपना टाइम विनाशी कमाई के पीछे अधिक वेस्ट नहीं करना है क्योंकि यह तो सब मिट्टी में मिल जाना है इसलिए बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेना है और दैवीगुण भी धारण करने हैं।

वरदानः- ब्राह्मण जीवन की प्रापर्टी और पर्सनालिटी का अनुभव करने और कराने वाली विशेष आत्मा भव

बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों को स्मृति दिलाते हैं कि ब्राह्मण बने - अहो भाग्य! लेकिन ब्राह्मण जीवन का वर्सा, प्रापर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी प्रसन्नता है। इस अनुभव से कभी वंचित नहीं रहना। अधिकारी हो। जब दाता, वरदाता खुली दिल से प्राप्तियों का खजाना दे रहे हैं तो उसे अनुभव में लाओ और औरों को भी अनुभवी बनाओ तब कहेंगे विशेष आत्मा।

स्लोगनः- लास्ट समय का सोचने के बजाए लास्ट स्थिति का सोचो।